2 चिट्ठी के अक्षर

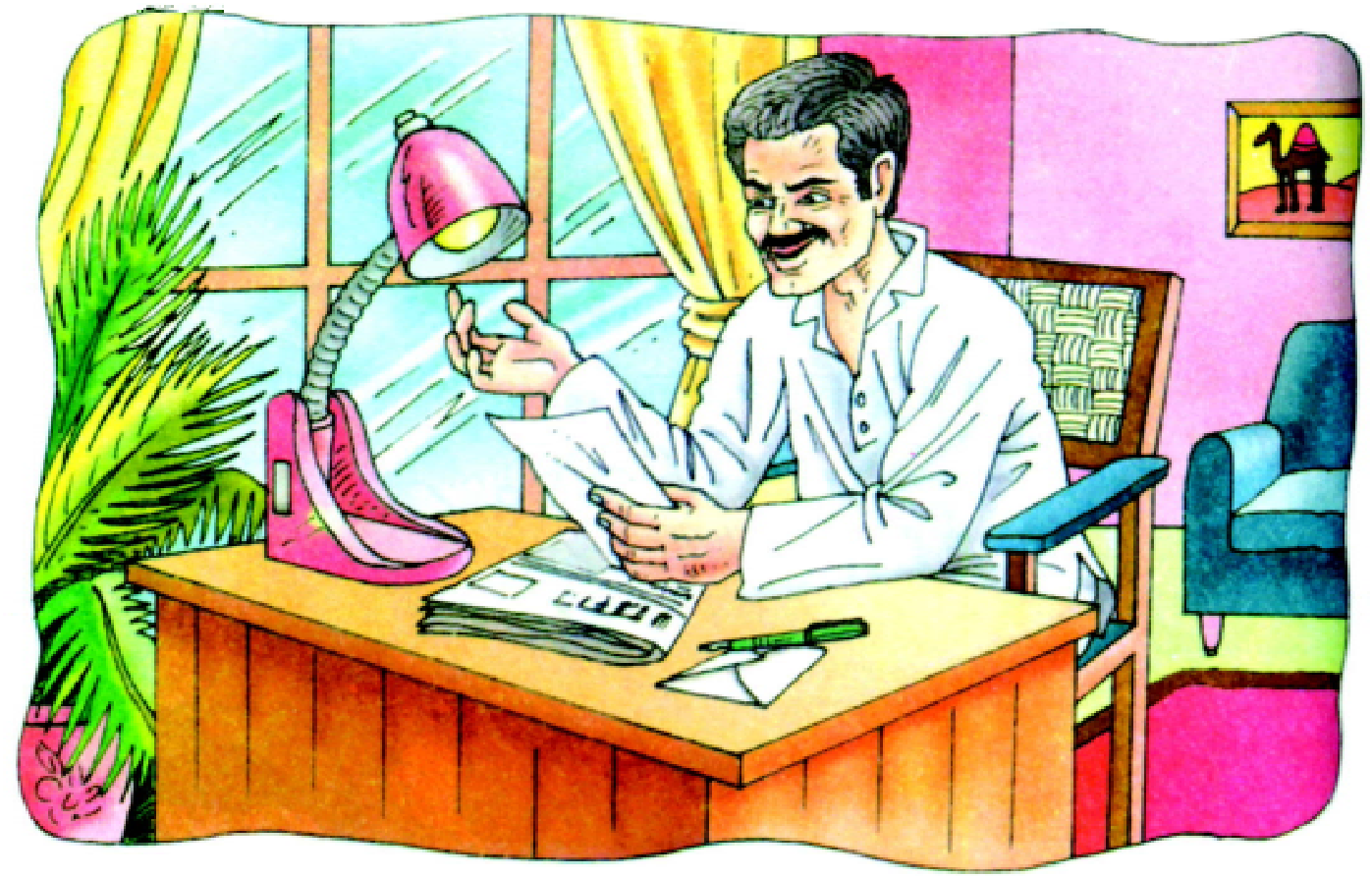

सुबह के दस बज रहे थे। मुझे डाक से एक चिट्ठी मिली। मैं लिफ़ाफ़ा खोलकर चिट्ठी पढ़ने लगा–कृपा करके मेरे अख़बार के लिए एक कविता भेज दीजिए। चिट्ठी के नीचे संपादक के हस्ताक्षर थे। संपादक का नाम महिपाल सिंह था। चिट्ठियाँ तो बराबर ही आती रहती हैं, पर इस चिट्ठी ने मेरे मन को अपनी ओर खींच लिया। इसका कारण यह था कि चिट्ठी की लिखावट बड़ी सुंदर थी। हर अक्षर साँचे में ढला हुआ-सा मालूम पड़ता था।

महिपाल सिंह से मेरी कोई जान-पहचान नहीं थी। यह उनकी पहली चिट्ठी थी। लिखावट देखकर मेरे मुँह से **अनायास** ही निकल पड़ा, ''वाह! बड़ी सुंदर लिखावट है।''

मैंने दूसरे ही दिन कविता भेज दी।

कविता अख़बार में छपी। जिस अंक में छपी, वह अंक भी मेरे पास आया।

शब्दार्थः अनायास–अचानक, एकाएक

पूरे बत्तीस पेज का साप्ताहिक अख़बार था। शुरू से लेकर अंत तक गाँव की ही बातें छपी थीं। बड़े सुंदर ढंग से सात दिनों के समाचार छाँट-छाँटकर छापे गए थे। किसानों के लिए जानकारी की बहुत-सी बातें भी थीं।

मैं अख़बार को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और दूसरे अंक के लिए फिर एक कविता भेज दी।

दूसरी कविता भी अख़बार में छपी। अब मैं बराबर कविता भेजने लगा। महिपाल सिंह की चिट्ठियाँ भी समय-समय पर आया करती थीं। वे कभी कविता माँगते थे और कभी कहानी। मैं बराबर उनकी इच्छाओं की पूर्ति कर दिया करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि हम दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम पैदा हो गया। लगभग साल-डेढ़ साल बीत गया। महिपाल सिंह ने अपने एक पत्र में लिखा—यदि आपका कभी इधर आना हो, तो मेरे ही घर ठहरने की कृपा करें। मैंने भी उत्तर में उन्हें लिख दिया—यदि उधर आना हुआ तो आपके दर्शन ज़रूर करूँगा।

संयोग की बात, दो-ढाई महीने बाद मुझे उधर एक शादी में जाना पड़ा। मैंने अपने आने की सूचना महिपाल सिंह को दे दी। **नियत** तिथि पर मैं उस ओर बारात में सम्मिलित होने के लिए गया। जब बारात से छुट्टी पा गया तो महिपाल सिंह के घर गया। महिपाल सिंह अपने घर के बाहरी कमरे में कुर्सी पर बैठकर मेज़ के सहारे कुछ लिख रहे थे। मैंने दरवाज़े पर खड़े होकर पूछा, ''क्या महिपाल सिंह जी हैं?''

महिपाल सिंह ने कुर्सी पर बैठे-ही-बैठे मेरी ओर देखते हुए पूछा, ''आप कौन हैं?''

मैंने उत्तर दिया, ''मेरा नाम अखिलेश शर्मा है।'' महिपाल सिंह उछल पड़े। उन्होंने तेज़ी के साथ आगे बढ़कर मुझे पकड़कर हृदय से लगा लिया और कहा, ''अरे शर्मा जी, आप! क्षमा कीजिएगा।''

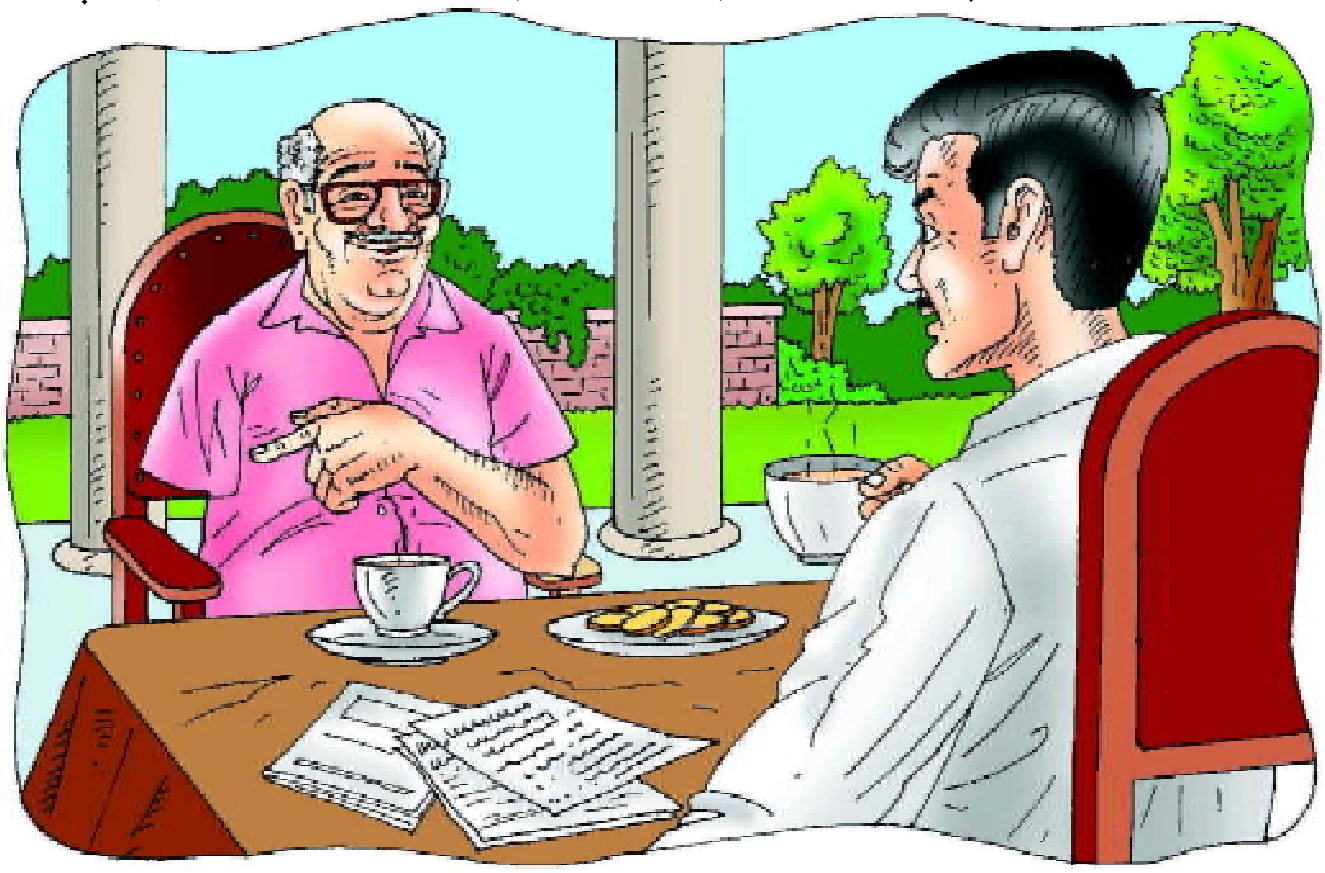

शब्दार्थ: नियत—निश्चित

मैं कुछ कहना ही चाहता था कि मेरी दृष्टि उनके हाथों पर पड़ी। उनका एक ही हाथ था–बायाँ। दायाँ हाथ कंधे तक कटा हुआ था। मैं आश्चर्यचकित होकर उनकी तरफ़ देखने लगा। वे बड़े खुश थे, बड़े स्वस्थ थे। एक क्षण में ही मेरे मस्तिष्क में अनेक प्रश्न कौंधने लगे–''क्या वह लिखावट इसी आदमी की थी? क्या यह बाएँ हाथ से इतने सुंदर अक्षर लिखता है?''

मैं महिपाल सिंह की ओर टकटकी लगाए देखता रहा। तब महिपाल सिंह ने पूछा, ''क्या देख रहे हैं? क्या यह कि आपको चिट्ठियाँ भेजने वाला महिपाल एक हाथ का आदमी है। अरे भाई, यह जीवन है। जीवन में क्या हो सकता है, कोई कुछ नहीं जानता।''

''आप तो मेरे मन की बात भाँप गए। मैं सचमुच यही सोच रहा था कि क्या आदमी बाएँ हाथ से भी इतने सुंदर अक्षर लिख सकता है?''

महिपाल सिंह ने जवाब दिया, ''शर्मा जी, दाएँ-बाएँ में कुछ फ़र्क नहीं होता। जो गुण दाएँ हाथ में होता है वही बाएँ हाथ में भी होता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस हाथ से काम करता है।''

हाथ-मुँह धोने के बाद जब मैं महिपाल सिंह के साथ चाय पीने लगा, तो मैंने उनसे पूछा, ''ठाकुर साहब, आप बाएँ हाथ से कब से लिख रहे हैं?''

महिपाल सिंह विचारों में डूब गए। कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले, ''इस वर्ष मेरी उम्र पचपन वर्ष की है। मैं चालीस वर्ष की उम्र तक फ़ौज में था। निशाना मारने में बड़ा तेज़ था। बाएँ और दाएँ–दोनों हाथों से **सटीक** निशाना मारता था।''

शब्दार्थः सटीक–ठीक-ठाक, जैसा चाहिए वैसा

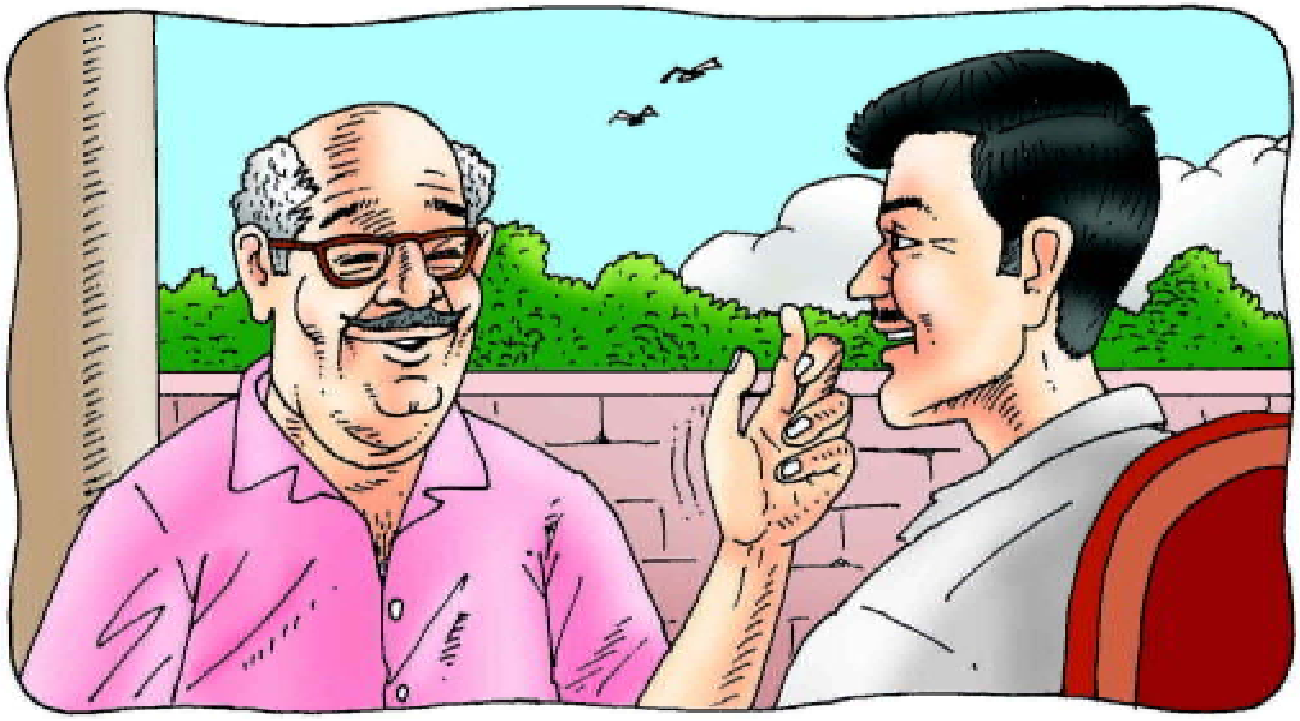

''संयोग की बात थी कि मुझे एक मोर्चे पर जाना पड़ा। एक दिन जब शत्रु को अपनी गोलियों का निशाना बना रहा था तो पास ही एक बम फटा और मेरा दाहिना हाथ कंधे तक उड़ गया। मैं गिर पड़ा। मुझे अस्पताल ले जाया गया। महीनों अस्पताल में पड़ा रहा। जब अच्छा हुआ तो सरकार ने मुझे पेंशन देकर सेवा से मुक्त कर दिया। सरकार ने मुझ से पूछा, ''सेवा से मुक्त होने पर मैं कौन-सा काम करूँगा?''

मैंने उत्तर दिया, ''मैं पहले कुछ पढ़ूँगा-लिखूँगा और फिर उसके बाद एक अख़बार निकालूँगा।'' सरकार ने मेरे पढ़ने-लिखने और अख़बार निकालने का पूरा इंतज़ाम कर दिया।

''मैं घर आकर बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास करने लगा। चार-पाँच साल तक मैं अभ्यास में ही लगा रहा। मैंने बहुत-सी कविताएँ लिखीं, कहानियाँ लिखीं और लेख लिखे। वे सभी चीज़ें मेरे पास मौजूद हैं। मेरी लिखावट उसी अभ्यास का परिणाम है। जब मैं लिखने में **दक्ष** हो गया तो अख़बार निकालने लगा। अब आप देख ही रहे हैं कि पूरे बत्तीस पेज का अख़बार हर सप्ताह निकालता हूँ।''

महिपाल सिंह अपनी बात खत्म करने के बाद उठे। उन्होंने चार-पाँच साल तक अभ्यास के रूप में लिखी हुई अपनी रचनाएँ अलमारी से निकालकर मेरे सामने रख दीं। मैं उनकी रचनाओं को देखने लगा—टेढ़े-मेढ़े अक्षर, दूर-दूर अक्षर, अलग-अलग अक्षर, फिर सुधरे हुए और फिर गोल-गोल सुंदर अक्षर तथा साँचे में ढले हुए अक्षर।

मैं मुग्ध होकर बोल उठा, ''ठाकुर साहब, आप धन्य हैं। मैंने बचपन में पढ़ा था—रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निसान। मगर आज अपनी आँखों से **प्रत्यक्ष** देख भी लिया।'' इतना कहने के बाद मैंने महिपाल सिंह जी से विदा ली।

—व्यथित हृदय

शब्दार्थः दक्ष—निपुण, कुशल; **प्रत्यक्ष**—आँखों के सामने

अभ्यास

पाठ में से

1. महिपाल सिंह द्वारा छापे गए साप्ताहिक समाचार-पत्र में क्या-क्या छपता था?
2. महिपाल सिंह ने लेखक को अपने घर आने का निमंत्रण क्यों दिया?
3. महिपाल सिंह से मिलने के बाद लेखक के मस्तिष्क में कौन-से प्रश्न कौंधने लगे?
4. महिपाल सिंह ने बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास किस प्रकार किया?

5. **उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

   (क) अखिलेश शर्मा जी को मिली चिट्ठी में उन्हें अख़बार के लिए क्या लिखकर भेजने को कहा गया था?

   ☐ जीवनी ☐ कविता ☐ कहानी ☐ संस्मरण

   (ख) चिट्ठी के नीचे किसके हस्ताक्षर थे?

   ☐ लेखक ☐ निर्देशक ☐ संपादक ☐ कवि

6. **पाठ के आधार पर नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथनों के सामने सही (✓) का निशान और गलत कथनों के सामने गलत (×) का निशान लगाइए–**

   (क) महिपाल सिंह चालीस वर्ष की उम्र तक फ़ौज में थे। ☐

   (ख) एक बस दुर्घटना में उन्होंने अपना हाथ खो दिया। ☐

   (ग) महिपाल सिंह दैनिक अख़बार के संपादक थे। ☐

   (घ) महिपाल सिंह की लिखावट बहुत सुंदर थी। ☐

   (ङ) महिपाल सिंह ने अपने कार्यालय में अखिलेश शर्मा को बुलाया था। ☐

बातचीत के लिए

1. चिट्ठी भेजने और प्राप्त करने के कौन-कौन से तरीके हैं?
2. आप चिट्ठी भेजने के लिए किस तरीके का इस्तेमाल करते हैं? उस तरीके की प्रक्रिया समझाइए।
3. आप कौन-सा समाचार-पत्र पढ़ते है? क्यों?
4. महिपाल सिंह ने अपना दायाँ हाथ कैसे खो दिया?